INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

आधुनिक हिंदी कविता और स्त्री-विमर्श

प्रमिला देवी [*1]
[*1] प्राध्यापिका, कन्या महाविद्यालय, खरखौदा (सोनीपत)

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.835393

मुख्य शब्द – आधुनिक हिंदी कविता; हिन्दी साहित्य; स्त्री–विमर्श

Cite This Article: प्रमिला देवी. (2017). “आधुनिक हिंदी कविता और स्त्री-विमर्श.” *International Journal of Research - Granthaalayah*, 5(6), 693-695. https://doi.org/10.5281/zenodo.835393.

1. भूमिका

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में पुरूषों के साथ–साथ नारी साहित्यकारों ने भी अपनी बहुमूल्य कृतियों से उल्लेखनीय योगदान दिया है । यहाँ अतीत भारत के इतिहास के पृष्ठ भारतीय महिलाओं की विशिष्ट कृतियों से भरे पड़े हैं । उस समय उन्हें पुरूषों के समान शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता था । कालांतर में समाज में कुप्रथाएँ बढ़ने लगी । देश की आज़ादी के साथ–साथ स्त्रियों की आज़ादी का भी अपहरण हुआ । इसमें उनसे समानता और शिक्षा का अधिकार भी छीन लिया गया ।

आधुनिक युग में नवजागरण के साथ ही नारियों की शिक्षा दीक्षा शुरू हुई । साहित्य की सभी विधाओं पर नारियों ने कलम चलाई है । आधुनिक कालीन कवियों ने मध्य युग की नारियों की दुर्दशा का अनुभव किया । गुप्त जी ने नारी की दयनीय दशा के विषय में वर्णन किया है :–

''अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी ।
आँचल में है दूध, और आँखों में पानी।।''1

अंग्रेजी शासन के विरूद्ध नारियों ने सत्याग्रह आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । गाँधी जी ने अछूतोद्धार की तरह नारी उद्धार के लिए भी प्रयास किए । समाज सुधारकों में राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द आदि ने कुपरंपराओं से मुक्त करने के लिए आंदोलन चलाया । ऐसे सुधारवादी प्रयासों से नारी स्वाभिमान को बढ़ावा मिला और नारी ने भी अपनी पहचान बनायी । पंत ने अपनी कविता में कहा–

''मुक्त करो नारी को, मानव चिर बंदिनी नारी को
युग–युग की निर्मल धारा से जननी, सखि, प्यारी को ।''2

राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित होकर कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कविता 'झाँसी की रानी' तथा 'वीरों का कैसा को वसंत' के माध्यम से नारी के सम्मान में चार चाँद लगा दिए । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समानता के लिए नारी संघर्ष ने अथक प्रयास किया । इस काल में नारियों ने राजनीतिक, आर्थिक,

सामाजिक, साहित्यिक आदि क्षेत्रों में अपना प्रभाव छोड़ना शुरू कर दिया। नारीवादी आंदोलनों ने और नारीवादी साहित्य ने स्त्रियों की समस्याओं का प्रतिनिधित्व किया है । हिंदी साहित्य में आज महिला साहित्यकारों के बहुआयामी लेखन, नारी चेतना रूप में व्यक्त हुआ है । इन महिला साहित्यकारों में प्रमुख हैं – सुमित्रा कुमारी सिन्हा, मृदुला गर्ग, मृणाल पांडेय, अमृता प्रीतम, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, रमणिका गुप्ता, रजनी पणिक्कर, शची रानी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं ।

नोबेल पुरस्कार विजेता उपन्यासकार डोरिस लेसिंग अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में यह पुरस्कार प्राप्त करने वाली दुनिया की सबसे पहली महिला हैं । इन्होंनें महिला मुक्ति आंदोलन को एक नए मुकाम पर पहुँचाने के लिए प्रेरित किया । महिला आंदोलन और महिला साहित्यकारों के संघर्षों का सुपरिणाम है कि आज देश के सर्वोच्च पद पर महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल आसीन हुईं । आजादी के बाद महिला साहित्यकार अपनी साहित्यधर्मिता के कारण विश्व की महान लेखिकाएँ बन गई हैं ।

आज़ादी के बाद जिन साहित्यकारों ने नारी की स्वतंत्रता के लिए अपनी लेखनी चलाई है उनमें प्रमुख हैं – नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, रांगेय राघव, त्रिलोचन, रघुवीर सहाय, कुँवर नारायण, दुष्यंत कुमार, राजेन्द्र यादव आदि । नागार्जुन ने 'भूमिजा' शीर्षक कविता में नर–नारी की समानता के स्वर को मुखरित किया है –

''नर–नारी में मर्यादा के बोध
सम–सम होंगे, सम–सम होगा न्याय ।
सम–सम होंगे विद्या–बुद्धि–विवेक
टिक सकता है क्योंकर वहाँ प्रवाद
जाग्रत होगी जहाँ परख की आंच ।''3

भारतीय सभ्यता का मूल मंत्र सादा जीवन उच्च विचार था । परंतु आज की नारियाँ सादे जीवन से बहुत दूर हैं । आज के संक्रांति युग में जब हमारे देश की जनता को न खाने को अन्न है और न पहनने को कपड़ा, संकट के क्षणों में हमारे देश के धन का अधिकांश हिस्सा फैशन परस्ती पर लुटा दिया जाता है । जिसका कोई भी रचनात्मक मोल नहीं । पुरूषों को मोहने के लिए आज की नारियाँ पुरातन स्वभाव को नहीं छोड़ रही हैं । 'जयति नखरंजिनी' कर्त्तव्यविमुख नारी के सामाजिक फैशन के संदर्भ को रेखांकित करती है –

''ठमक गए सहसा बेचारियों के पैर
हाय इतने सुंदर, हाथ हो जायेंगे दागी
भड़क उठा परिमार्जित रूचि–बोध
कौन ले बैलेट पेपर, मतदान कौन करे ।''4

सेवा भावना के धनी एवं प्रगति के महान चितेरे डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव ने अपनी कृति 'स्वयं धरित्री ही थी'' में सदियों से उपेक्षित नारी की व्यथा का मार्मिक चित्रांकन किया है –

''अमर रहेगी आर्य संस्कृति,
महा तपस्विनी
चिर दुखियारिनी
तू धरती से ही जन्मी थी
धरती में ही लीन हो गई ।''5

इस प्रकार आधुनिक हिंदी कविता में नारीवादी लेखन से नारी की महत्ता प्रतिष्ठित हुई है ।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

सन्दर्भ

[1] मैथिलीशरण गुप्त – चम्पूकाव्य 'यशोधरा' से उद्घृत ।
[2] लेखक डॉ. श्री हरिदामोदर पंत और रश्मिवध, प्रकाशक भारत बुक डिपो, पृ0 169
[3] नागार्जुन, 'भूमिजा' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरी आवृति 1994 पृष्ठ–67
[4] सम्पादक प्रभाकर माचवे आज के लोकप्रिय हिंदी कवि – नागार्जुन राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली पृष्ठ–72
[5] रमाकांत श्रीवास्तव 'स्वयं धारित्री ही थी' से उद्घृत, पृष्ठ–89

*Corresponding author.
E-mail address: permila10478 @gmail.com